بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 7 फ़रवरी 2025, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.

ज़ीक़र्द नामक युद्ध, हज़रत अबान बिन सईद नामक सरिय्या नजद की ओर तथा खैबर के युद्ध के परिपेक्ष में सीरत-ए-नबवी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-07.02.2025

محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- खैबर के युद्ध का वर्णन हो रहा था, आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के खैबर की ओर रवाना होने का विस्तारण यूं है कि आप स. के नेतृत्व में सोलह सौ बलिदानियों की सेना मदीने से रवाना हुई, परन्तु रवानगी से पहले आप स. ने एक सूचनाएं देने वाला दल आगे रवाना फ़रमाया जिसका काम यह था कि सेना के आगे आगे रास्तों की निगरानी करे और परिस्थितियों की भी जानकारी करता रहे। इस दल के मुख्या हज़रत अबादा बिन बशर अंसारी रज़ी. थे। खैबर के रास्तों की जानकारी के लिए दो मार्ग दर्शक, अर्थात गाइड इस काम पर रखे गए। मदीने से खैबर की तरफ़ जाते हुए, विभिन्न स्थानों पर पड़ाव करते हुए, सुह्बा नामक स्थान पर पड़ाव डाला। यहाँ नमाज़ का समय हुआ तो नमाज़ यहाँ अदा की गई। अतएव बुख़ारी की रिवायत में है कि सुह्बा नामक स्थान पर आप स. ने असर की नमाज़ पढ़ी, फिर उसके बाद खाने के लिए कुछ मंगवाया गया। सैन्य दलों के पास केवल सत्तू ही थे और रसूलुल्लाह स. और सहाबा रज़ी. ने वही ग्रहण किया। रावी बयान करते हैं कि फिर आप स. मग़रिब की नमाज़ के लिए खड़े हो गए और आप स. ने कुल्ली की, फिर आप स. ने नमाज़ पढ़ी और ताज़ा वज़ू नहीं किया।

यात्रा के बीच कुछ ऐसी घटनाएं भी हुईं जिनसे पता चलता है कि ऐसी दुर्लभ परिस्थितियों में भी नबी अकरम स. अपने सहाबियों की तर्बियत का कितना ध्यान रखते थे और अनुशासन एवं आज्ञा-पालन जैसे गुणों को पैदा करने की ओर ध्यान दिलाते रहते थे। इसी तरह की एक घटना

बयान हुई है कि एक रात सेना के आगे आगे कोई चमकती हुई चीज़ चलती दिखाई दी, रसूलुल्लाह स. को चिन्ता हुई और पता करने पर ज्ञात हुआ कि इसलामी सेना का एक सिपाही था जो सेना को छोड़ कर सबसे आगे आगे चला जा रहा था और उसके सिर का कवच चांदी का होने के कारण चमक रहा था और उसका नाम अबू अबस था। उनको जब रसूलुल्लाह स. की सेवा में लाया गया तो आप स. ने नसीहत करते हुए फ़रमाया कि सेना के साथ साथ चलना चाहिए।

आँहज़रत स. ने बनू गत्फ़ान की तरफ़ दोस्ती का सन्देश भी भेजा था। आँहज़रत स. को भी यह सूचना मिल चुकी थी कि बनू गत्फ़ान ने खैबर वालों की सहायता करने का वादा किया है और अब वे चार हज़ार की अतिरिक्त सेना लेकर इस योजना के साथ चल पड़े हैं कि वे इस्लामी सेना के खैबर पहुँचने से पहले ही रास्ते में इस पर हमला कर दें। आँहज़रत स. ने बनू गत्फ़ान से सम्पर्क किया और उन्हें एक पत्र भेजा, जिसमें लिखा कि वे खैबर के साथ होने वाली लड़ाई से निष्पक्ष रहें, और उनपर स्पष्ट किया कि यह अल्लाह तआला का मेरे साथ वादा है कि वह मुझे विजय देगा। परन्तु सोलह सौ मुसलमानों के मुक़ाबले पर पन्द्रह हज़ार योद्धाओं की सेना और सुदृढ़ क़िलों का अहंकार उनके सिरों में समाया हुआ था, जिसके कारण उन्होंने आप स. के इस प्रस्ताव को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया।

इस पर आप स. ने खिज़रज क़बीले के सरदार और निष्ठावान सहाबी हज़रत सअद बिन अबादा रज़ी. को बनू गत्फ़ान के सेनापति ईनिया बिन हिस्न की ओर भेजा। वह आप स. को क़िले से बाहर मिला, आप रज़ी. ने उसे नबी अकरम स. का सन्देश दिया। इस पर ईनिया ने आप रज़ी. से कहा कि हम अपने दोस्त को किसी अवस्था में नहीं छोड़ेंगे और हम जानते हैं कि तुम लोगों के पास शक्ति ही कितनी है? यदि तुमने मुक़ाबला किया तो सब लोग मारे जाओगे और यह क़ुरैश इत्यादि की भांति के लोग नहीं हैं कि जिन पर तुमने विजय पा ली थी और साथ ही यह भी कहा कि मेरा यह सन्देशा मुहम्मद (स.) को भी दे देना। हज़रत सअद रज़ी. ने उसके इस घमंडी उत्तर पर उसे कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद स. अवश्य तेरे पास इस क़िले में आएँगे और अब इस समय जो प्रस्ताव हमने तुझे किया है, उस समय तुम हम से यही मांगोगे, किन्तु तब तुझे तलवार के अतिरिक्त कुछ न मिलेगा, और ऐ ईनिया! मैं देख चुका हूँ कि हम मदीने के यहूदियों के आँगन में भी उतरे थे और उनका सर्वनाश हो गया था।

ख़ुदाई दबदबे तथा गत्फ़नियों के भागने का भी वर्णन मिलता है। आँहज़रत स. ने फ़रमाया था- نُصِرْتُ بِالرُّعْبِ कि मुझे रोब का समर्थन दिया गया है। यह घटना यहाँ एक बार फिर गत्फ़ानी सेनाओं के लिए घटित हुई। इनकी चार हज़ार की सेना इस्लामी सेना पर हमला करने के लिए इनका पीछा कर रही थी ताकि ये मुसलामानों को खैबर पहुँचने से रोक दें, परन्तु कोई ऐसा ख़ुदा का चमत्कार हुआ कि इनकी यह सेना यकायक वापस पलटी और अपने घरों की ओर लौट गई।

यहूदियों को यह आभास नहीं था कि मुहम्मद स. उनपर हमला करेंगे, क्यूँकि उन्हें अपने क़िलों, अस्त्र शस्त्र तथा मानव शक्ति पर घमंड था। जब यहूदियों को यह पता चला कि आप स. उनकी तरफ़ आ रहे हैं तो हर दिन दस हज़ार योद्धा पंक्तिबद्ध बाहर निकलते और कहते कि तनिक

देखो! क्या मुहम्मद (स.) हम पर सेना चढ़ा कर लाएंगे, यह असम्भव है। जब आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम इनके पास पहुंचे तो इनको पता ही नहीं चला यहाँ तक कि सूर्य उदय हो गया। प्रातः जब यहूदी अपने क़िलों से बाहर निकले तो उनके हाथों में कुदाल और टोकरियाँ थीं। जब उन्होंने आप स. को देखा तो भाग कर अपने क़िलों में छिप गए। हज़रत अनस रज़ी. कहते हैं कि जब उन्होंने आप स. को देखा तो कहने लगे कि मुहम्मद (स.) अल्लाह कि क़सम! मुहम्मद (सलल्लाहु अलैहि वसल्लम) और सेना! नबी स. ने फ़रमाया- خَرِبَتْ خَيْبَرُ! إِنَّا نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ अर्थात खैबर का विनाश हो गया! जब हम किसी क़ौम के आंगन में उतरते हैं तो डराए जाने वालों की सुबह बुरी होती है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि खैबर के अनेक क़िले थे उनके विस्तार के विषय में भी बयान अनिवार्य है। खैबर की भूगोलिक स्थिति के सम्बन्ध में इनके क़िलों का वर्णन इस प्रकार है कि क्यूँकि यह संग्राम क़िलों से ही संबंधति रहा जो एक के बाद एक अधिकार में आते गए, न केवल इन क़िलों की संख्या के बारे में बल्कि इनके नामों के बारे में भी मतभेद है। समस्त किताबों के देखा जाए तो यह कहा जा सकता है कि खैबर का इलक़ा तीन भागों, नताह, शक़ और कतीबा में विभाजित था और इन तीनों में आठ क़िले निम्नलिखित विस्तारण के अनुसार थे। नताह में तीन- नाअम, सअब और जुबैर, शक़ में- उब्बी तथा एक अन्य, एक कथन के अनुसार नज़ार, तथा कतीबा में तीन- क़मूस, वतीअ और सलालम नामक क़िले थे।

युद्ध आरम्भ होने से पहले आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहबा रज़ी. से एक संक्षिप्त संबोधन करते हुए फ़रमाया कि दुश्मन से सामना होने की अभिलाषा मत करो, अल्लाह तआला से शरण चाहो, तुमको पता नहीं कि तुम किस परीक्षा में डाल दिए जाओ, जब तुम दुश्मन के सामने आओ तो यह दुआ करो कि ऐ अल्लाह! तू हमारा रब है और उनका रब है, उनके मस्तक और हमरे मस्तक तेरे हाथ में हैं, तू ही इनकी हत्या करेगा।

क़िला नाअम यहूदियों का सबसे मज़बूत क़िला था और खैबर का सर्वशक्ति शाली एवं प्रसिद्ध यौद्धा जिसका नाम मर्हब था, इस क़िले की सुरक्षा का मुख्या था। रिवायतों से ज्ञात होता है कि आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम दस दिन तक निरन्तर युद्ध करते रहे। बार बार की असफलता और सहाबियों के घायल होने तथा दो सहाबियों की शहादत से यहूदियों के साहस और अधिक हो गए थे। अन्ततः एक रात आप स. ने फ़रमाया कि कल मैं उस व्यक्ति के हाथ में झंडा दूंगा जिसके हाथ पर अल्लाह तआला विजय प्रदान करेगा, वह अल्लाह और उसके रसूल से प्रेम करता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने इस विषय में इस प्रकार बयान फ़रमाया है कि एक दिन रसूलुल्लाह स. को ख़ुदा तआला ने बताया कि इस नगर पर विजय हज़रत अली रज़ी. के हाथ से लिखी है। आप स. ने हज़रत अली रज़ी. को बुलाया और उनको झंडा दिया। जिन्होंने सहाबा रज़ी. की सेना साथ लेकर क़िले पर हमला किया, बावजूद इसके कि यहूदी क़िलों में बंद थे, अल्लाह तआला ने हज़रत अली रज़ी. और दूसरे सहाबा रज़ी. को उस दिन ऐसी शक्ति प्रदान की, कि शाम

से पहले पहले क़िला फ़तह हो गया। जब यहूदी पराजित हो गए और नाअम नामक क़िले पर मुसलमानों का हमला रोकने में असफल हो गए तो ख़ुद भी चुपचाप सअब बिन मुआज़ नामक क़िले में चले गए और नाअम क़िले के अभियान में कोई एक यहूदी भी मुसलमानों के हाथ नहीं आया। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- अन्य क़िलों के और अधिक विस्तारण भी हैं जो इंशाल्लाह आगे बयान होंगे।

हुज़ूरे अनवर ने अन्त में फ़रमाया- जैसा कि मैं दुआ के लिए कहता रहता हूँ दुनिया के हालात के बारे में, मुसलमानों के हालात के बारे में, फ़लसतीनियों के लिए विशेष रूप से तथा मुस्लिम दुनिया के लिए सामान्य रूप से ख़ूब दुआ करें। इनके हालत प्रत्यक्षतः तो यह लगता है लोग ख़ुश हैं कि शायद ceasefire हो गई तो सुविधा हो जाएगी, परन्तु बुरे से बुरे हो रहे हैं। नए अमरीकन सदर की पालिसी और स्कीम अत्याचार की एक चरम सीमा को पहुँची हुई है। पहले तो अमरीकन कहते थे कि हमारे देश के लिए शंका जनक है, बाहर की दुनिया में हस्तक्षेप नहीं करता, किन्तु अब तो यह पूरे विश्व के लिए शंका जनक बन चुका है। अल्लाह तआला फ़लिस्तीनियों पर दया करे और पूरी दुनिया पर रहम फ़रमाए और इससे बचे रहें। अरब देश अब भी अपनी आँखें खोलें और एकता बनाने का प्रयास करें, इसके बिना कोई रास्ता नहीं, अन्यथा फ़लिस्तीन ही नहीं अन्य अरब देश भी अति दुविधा पूर्ण स्थिति का सामना करेंगे। यद्यपि अब कुछ ग़ैर मुस्लिमों की ओर से भी फ़लिस्तीनियों के समर्थन में अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ें उठने लगी हैं परन्तु जो शक्ति शाली है, वह तो इस समय पूर्ण रूप से अपनी शक्ति के नशे में चूर है, किसी की सुनना नहीं चाहता। अतः मुसलमानों को अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता है और हमें उनके लिए दुआएं करने की ज़रुरत है। हमारे पास तो और कोई सामर्थ्य नहीं है।

इसी तरह पाकिस्तान के अहमदियों के लिए भी दुआ करें, इनके भी हालात कई बार कुछ दिनों के लिए अत्यधिक जटिल हो जाते हैं, विरोध में। बंगला देश के अहमदियों के लिए भी दुआ करें, अल्लाह तआला इनको हर प्रकार के विरोधों एवं हमलों से बचाए। अन्य शेष स्थानों पर भी पीड़ित लोगों के लिए दुआ करें, पीड़ित अहमदियों के लिए दुआ करें। अल्लाह तआला इन सबको अपनी शरण एवं सुरक्षा में रखे, दुनिया को बुद्धि दे और इन सबका शान्ति स्थापित करने की ओर ध्यान पैदा हो, अल्लाह तआला हमें दुआओं की तौफ़ीक़ दे। आमीन

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131